



Namaz Se Madad Ki Teen Hikayaat (Hindi)

एकपत्रिका किताब : 268
Weekly Booklet : 268

अपीरि अहले सुन्नत بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ की किताब “कैजुने नमाज” की
एक किस्तु सञ्च तरमीम य इनाफ़ा बनाना

नमाज़ से मदद की तीन हिक्कायात

सफ़र 22

03

नमाज़ की बरकत से चरफ़ा ज़ारी हो गइल

07

किताबो य सफ़रुनी बीबीबीबी से किताब

10

इसरो यारी यारी की अतिथिनी बरिफ़ात

16

सुख सुख अति चरफ़ासे बेदरुनी बनने

सिखे लीकत, अपीरि अहले सुन्नत, बरिफ़े य 'से इलायी, इसरोने अन्नाय बिलाना अञ्च किताब

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी محمّد إلیاس اذتار قادیری رجبی

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دامت بركاتهم العالیه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! एَزُوجَلْ ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (مُسْتَعْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मरिफ़रत



13 शब्वातुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : नमाज़ से मदद की तीन हिकायात

सिने तबाअत : 1443 हि., 2022 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्लिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

नमाज़ से मदद की तीन हिकायात

येह रिसाला (नमाज़ से मदद की तीन हिकायात)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।
(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

(येह मज़मून किताब “फ़ैज़ाने नमाज़” सफ़्हा 23 ता 39 से लिया गया है।)

नमाज़ से मदद की तीन हिकायात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमान आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरासता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।” (सनن नसائي، ص 220، حديث: 1281)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मुसीबत में नमाज़ से मदद चाहने की तीन हिकायात

① बेटे को पोलिस ने छोड़ दिया (हिकायात)

हज़रते अबुल हसन सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की ख़िदमते बा बरकत में आप की पड़ोसन ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : ऐ अबुल हसन ! रात मेरे बेटे को सिपाही पकड़ कर ले गए हैं शायद वोह उसे तकलीफ़ पहुंचाएं, बराहे करम ! मेरे बेटे की सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये या किसी को मेरे साथ भेज दीजिये । पड़ोसन की फ़रियाद सुन कर आप खड़े हो कर खुशूओ खुजूअ के साथ नमाज़ में मशगूल हो गए । जब काफ़ी देर हो गई तो उस औरत ने कहा : ऐ अबुल हसन ! जल्दी कीजिये ! कहीं ऐसा न हो कि हाक़िम मेरे बेटे को कैद में डाल दे ! आप नमाज़ में मशगूल रहे, फिर सलाम फेरने के बा'द फ़रमाया : “ऐ अल्लाह पाक की बन्दी ! मैं

तेरा मुआमला ही तो हल कर रहा हूँ।” अभी येह गुफ्तगू हो ही रही थी कि उस पड़ोसन की ख़ादिमा आई और कहने लगी : बीबी जी ! घर चलिये ! आप का बेटा घर आ गया है। येह सुन कर वोह पड़ोसन बहुत खुश हुई और आप को दुआएं देती हुई वहां से रुख़सत हो गई।

(उयूनुल हिकायात (उर्दू), 1/266)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन सब पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

أَمِينَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कैदियो ! चाहो बराअत, तुम पढ़ो दिल से नमाज़ दूर हो जाएगी आफ़त, तुम पढ़ो दिल से नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿2﴾ मूस्लाधार बारिश हुई... कैसे ? (हिकायात)

ख़ादिमे नबी हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के बाग़बान (या'नी माली) ने एक बार हाज़िर हो कर शदीद क़हूत साली (या'नी बारिशें न होने) की शिकायत की। आप ने वुजू किया और नमाज़ पढ़ी फिर फ़रमाया : ऐ बाग़बान ! आस्मान की तरफ़ देख ! क्या तुझे कुछ नज़र आ रहा है ? उस ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! मुझे तो आस्मान में कुछ भी नज़र नहीं आ रहा ! आप ने दोबारा नमाज़ पढ़ कर येही सुवाल फ़रमाया और बाग़बान ने वोही जवाब दिया। फिर तीसरी या चौथी बार नमाज़ पढ़ कर वोही सुवाल किया तो बाग़बान ने जवाब दिया : एक परिन्दे के पर के बराबर बदली का टुकड़ा नज़र आ रहा है। आप नमाज़ व दुआ में बराबर मशगूल रहे यहां तक कि आस्मान में हर तरफ़ अब्र (या'नी बादल) छा गया और मूस्लाधार बारिश हुई। हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने बाग़बान को हुक्म दिया : घोड़े पर सुवार हो कर देखो कि

बारिश कहां तक पहुंची है ? उस ने चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ा कर देखा और आ कर कहा कि येह बारिश “मुसय्यरीन” और “गज़्बान” के महल्लों से आगे नहीं बढ़ी । (करामाते सहाबा, स. 195) (طبقات ابن سعد ج ٧ ص ١٥)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन सब पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।
 أمين بجاہ خاتم التّيبين صلي الله عليه وآله وسلم

अब्रे रहमत झूम कर बरसेगा हो जाएगी दूर कहत साली की मुसीबत तुम पढ़ो दिल से नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

③ चश्मा जारी हो गया (हिकायत)

हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ फ़ेहरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का लश्कर अफ़्रीका के जिहादों में एक बार किसी ऐसे मक़ाम पर पहुंच गया जहां पानी का दूर दूर तक नामो निशान नहीं था, और इस्लामी लश्कर शिद्दते प्यास से बेताब हो गया । हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ फ़ेहरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ कर दुआ के लिये हाथ उठा दिये, अभी दुआ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि आप का घोड़ा अपने सुम (या'नी पाउं) से ज़मीन कुरेदने लगा, आप ने उठ कर देखा तो मिट्टी हट चुकी थी और एक पथ्थर नज़र आ रहा था ! आप ने जैसे ही पथ्थर हटाया एक दम उस के नीचे से पानी का चश्मा उबलने लगा और इस क़दर पानी निकला कि सारा लश्कर सैराब हो गया, तमाम जानवरों ने भी ख़ूब पानी पिया और लश्करियों ने अपनी अपनी मशकों में भी भर लिया, फिर उस चश्मे को बहता छोड़ कर लश्कर आगे रवाना हो गया । (الكامل في التاريخ ج ٣ ص ٤٥١)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन सब पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।
 أمين بجاہ خاتم التّيبين صلي الله عليه وآله وسلم

क़लए बे आब हो, बेचैन हो बेताब हो प्यास की हो दूर शिदत, तुम पढ़ो दिल से नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हमें नमाज़ से राहत पहुंचाओ !

ऐ अशिक़ाने नमाज़ ! जब कोई मुसीबत आ जाए या बला नाज़िल हो या कोई नाजुक मुआमला दरपेश हो तो फ़ौरन नमाज़ का सहारा ले लेना चाहिये, हमारे प्यारे आका صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अहम मुआमला पेश आने पर नमाज़ में मशगूल हो जाते थे क्यूं कि नमाज़ तमाम अज़कार व दुआओं की जामेअ (या'नी पूरा करने वाली) है, इस की बरकत से रन्जो ग़म से राहत मिलती है, येही वजह है कि मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते बिलाल رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से फ़रमाते : “ऐ बिलाल ! हमें नमाज़ से राहत पहुंचाओ” (معجم كبير ج ٦ ص ٢٧٧ حديث ١٢١٠) (या'नी ऐ बिलाल ! अज़ान दो ताकि हम नमाज़ में मशगूल हों और हमें राहत मिले) । हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब तुम आस्मान से कोई (गड़गड़ाहट वगैरा की डरावनी) आवाज़ सुनो तो नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ । (شرح البخارى لابن بطال ج ٣ ص ٢٦) “मब्सूत” में है : जब तारीकी (या'नी अंधेरा) छा जाए या शदीद हवाएं चलने लगें तो उस वक़्त नमाज़ पढ़ना बेहतर है, हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के बारे में मन्कूल है कि बसरा में ज़ल्ज़ला आया तो आप رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने नमाज़ पढ़ी । (مرقاة المفاتيح ج ٣ ص ٥٩٨)

दो रक़अत नमाज़ मुस्तहब होने के बा 'ज़ मवाक़ेअ

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी (या'नी अंधेरा) छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो या लगातार कसरत से मेंह

(या'नी बारिश) बरसे या ब कसरत ओले (Hail) पड़ें या आस्मान सुर्ख हो जाए या बिजलियां गिरें या ब कसरत तारे टूटें या ताऊन वगैरा वबा फैले या जलजले आए या दुश्मन का खौफ हो या और कोई दहशत नाक अम्र (या'नी खौफनाक मुआमला) पाया जाए **इन सब के लिये दो रकअत नमाज़ मुस्तहब है।** (عالمگیری ج ۱ ص ۱۰۲) (बहारे शरीअत, जि. 1/788)

तहरीर के दौरान जब जलजला आया ! (हिकायत)

इमाम फ़ख़रुद्दीन राजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : आज सुब्ह पहली मुहर्मुल ह्राम 602 हिजरी को मैं इस किताब (या'नी तफ़्सीरे कबीर) के अवरक (Pages) लिख रहा था कि अचानक जलजले के झटके आए और ज़ोरदार आवाज़ आई ! मैं ने लोगों को देखा कि वोह चीख़ चीख़ कर और गिड़गिड़ा कर दुआएं मांग रहे थे। फिर जब ज़मीन पुर सुकून हो गई, खुश गवार हवा चलने लगी और हालात मा'मूल पर आ गए तो लोग फिर अपनी हरकतों की तरफ़ लौट गए और इसी तरह फुज़ूल और बेहूदा कामों में मशगूल हो गए और भूल गए कि अभी वोह थोड़ी देर पहले चीख़ पुकार कर रहे थे, **अल्लाह** पाक के नाम की दुहाई दे रहे थे और उस से गिड़गिड़ा कर दुआएं कर रहे थे। (تفسير كبير ج ۷ ص ۲۲۳)

बन्दा मुसीबत में रब को पुकारता और.....

पारह 23 सूरतुज्जुमर की आयत नम्बर 8 में इर्शाद होता है :

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوَ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है अपने रब को पुकारता है उसी तरफ़ झुका हुवा, फिर जब अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई ने'मत दी तो भूल जाता है जिस लिये पहले पुकारा था।

नीज़ पारह 11 सूराए यूनुस की आयत 12 में इर्शाद होता है :

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا
لِجَنَّتِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَالِبًا فَلَئِمَّا
كَشَفْنَا عَنْهُ صُورَةَ مَرٍّ كَانُ لَمْ
يَدْعُنَا إِلَىٰ صُرٍّ مَسَّهُ ٭

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब आदमी को तकलीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लेटे और बैठे और खड़े, फिर जब हम उस की तकलीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है गोया कभी किसी तकलीफ़ के पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ इस आयत के तहत लिखते हैं : मक्सद येह है कि इन्सान बला के वक्त बहुत ही बे सब्रा है और राहत के वक्त निहायत नाशुक्रा, जब तकलीफ़ पहुंचती है तो खड़े, लेटे, बैठे हर हाल में दुआ करता है जब **अल्लाह** तकलीफ़ दूर कर दे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी हालते साबिका (या'नी पिछली हालत) की तरफ़ लौट जाता है, येह हाल गाफ़िल का है, मोमिने अक़िल (या'नी अक़ल मन्द मुसल्मान) का हाल इस के ख़िलाफ़ है, वोह मुसीबत व बला पर सब्र करता है, राहतो आसाइश में शुक्र करता है, तकलीफ़ व राहत के जुम्ला अहवाल (या'नी तमाम हालतों) में **अल्लाह** पाक के हुज़ूर तज़र्रोअ व ज़ारी (या'नी रोता गिड़गिड़ाता) और दुआ करता है और एक मक़ाम इस से भी आ'ला है जो मोमिनों में भी मख़सूस बन्दों को हासिल है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है उस पर सब्र करते हैं, क़ज़ाए इलाही पर दिल से राज़ी रहते हैं और जमीअ अहवाल पर (या'नी तमाम हालतों में) शुक्र करते हैं ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 393)

वुजू व नमाज़ बीमारियों से बचाते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ में जिस तरह मुसीबतों का इलाज है। इसी तरह इस में बीमारियों का भी इलाज है, खुद तबीबों को ए'तिराफ़ है कि वुजू करने वाला शख्स दिमागी अमराज़ में बहुत कम मुब्तला होता है, नमाज़ी जुनून (या'नी पागल पन) और तिल्ली (Spleen) की बीमारियों से अक्सर महफूज़ रहता है, नमाज़ पढ़ने के लिये दिन में कई बार वुजू करने से आ'जा धुलते रहते हैं और नमाज़ी कपड़े भी पाक साफ़ रखता है, इस लिये गन्दगियों और नापाकियों से हिफ़ाज़त रहती है और ज़ाहिर है कि गन्दगी बहुत सी बीमारियों की जड़ है।

नमाज़ में शिफ़ा है

हज़रते अबू हुरैरा رضي الله عنه बयान करते हैं कि एक बार मैं नमाज़ पढ़ कर सरकारे मदीना صلّى الله عليه وآله وسلم के पास बैठ गया, आप صلّى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : क्या तुझे पेट में दर्द है ? मैं ने अर्ज़ की : जी हां । फ़रमाया : **فَأَنَّ فِي الصَّلَاةِ شِفَاءً** : “उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि नमाज़ में शिफ़ा है।” (ابن ماجه ج ٤ ص ٩٨ حديث ٣٤٥٨)

बे अ़दद अमराज़ से महफूज़ रखेगी तुम्हें हक़ से दिलवाएगी सिह्हत तुम पढ़ो दिल से नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

नमाज़ से मिलने वाली जिस्मानी व रूहानी बीमारियों से शिफ़ा वगैरा के मुतअल्लिक़ 21 मदनी फूल

(इब्तिदाई 6 मदनी फूल “इब्ने माजह हाशिया सिन्धी” जिल्द 4 सफ़हा 98 से और

बक़िय्या फ़ैजुल क़दीर जिल्द 4 सफ़हा 689 से पेश किये गए हैं)

❀❀❀ 1❀ नमाज़ दिल, मे'दा और आंतों वगैरा के मरज़ में शिफ़ा देती है ❀❀❀ 2❀

नमाज़ दर्दों ग़म का एहसास भुला देती या कम कर देती है ﴿3﴾ नमाज़ में बेहतरीन वर्ज़िश है कि इस के क़ियाम में, रुकूअ और सज्दे वग़ैरा करने से बदन के अक्सर जोड़ (Joints) हरकत करते हैं ﴿4﴾ नज़्ला जुकाम के मरीज़ के लिये त़वील (या'नी लम्बा) सज्दा निहायत मुफ़ीद है ﴿5﴾ सज्दे से बन्द नाक खुलती है ﴿6﴾ आंठों में जम्अ होने वाले ग़ैर ज़रूरी मवाद को हरकत दे कर निकालने में सज्दा काफ़ी मददगार साबित होता है ﴿7﴾ नमाज़ से ज़ेहन साफ़ होता और गुस्से की आग बुझ जाती है ﴿8﴾ नमाज़ रिज़क़ लाती ﴿9﴾ सिद्दहत की हिफ़ाज़त करती ﴿10﴾ अज़िय्यत (या'नी तकलीफ़) दूर करती ﴿11﴾ बीमारी भगाती ﴿12﴾ दिल की कुव्वत बढ़ाती ﴿13﴾ फ़रहत (या'नी खुशी) का सामान बनती ﴿14﴾ सुस्ती दूर करती ﴿15﴾ शर्हें सद्र करती या'नी सीना खोलती ﴿16﴾ रूह को ग़िज़ा फ़राहम करती ﴿17﴾ दिल मुनव्वर (या'नी रोशन) करती ﴿18﴾ चेहरा चमकाती ﴿19﴾ बरकत लाती ﴿20﴾ खुदाए रहमान से क़रीब पहुंचाती और ﴿21﴾ शैतान को दूर भगाती है। (येह फ़वाइद उसी सूत में हासिल हो सकते हैं जब नमाज़ इत्मीनान से दुरुस्त तरीके पर अदा की जाए)

दूर हों बीमारियां बेकारियां नाकामियां दिल में दाख़िल हो मसरत, तुम पढ़ो दिल से नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

किस नबी ने कौन सी नमाज़ अदा फ़रमाई

बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने मुख़्तलिफ़ अवक़ात की नमाज़ें जुदा जुदा मवाक़ेअ पर अदा फ़रमाईं। अल्लाह पाक ने अपने उन प्यारों की प्यारी प्यारी अदाओं को हम गुलामाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर फ़र्ज़ कर दिया। चुनान्चे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान

رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने चन्द रिवायात बयान करने के बा'द जिस रिवायत को बेहतर करार दिया उस के मुताबिक नमाज़े फ़ज़्र हज़रते आदम, नमाज़े ज़ोहर हज़रते दावूद, नमाज़े अ़स् हज़रते सुलैमान, नमाज़े मग़रिब हज़रते या'कूब और नमाज़े इशा हज़रते युनुस عَلَيْهِمُ السَّلَام ने सब से पहले अदा फ़रमाई ।
(फ़तावा रज़विय्या, 5/43 ता 73 मुलख़ब़सन)

सुब्ह होने का शुक्राना

“फ़तावा शामी” में हैं हज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने सुब्ह होने के शुक्रिय्या में दो रकअतें सब से पहले अदा कीं तो येह नमाज़े फ़ज़्र हो गई । (رد المحتار ج २ ص १६) अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त की रहमत से जन्नत में उजाला ही उजाला, नूर ही नूर है । जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने मुबारक क़दमों से ज़मीन को नवाज़ा तो शब देखी और फिर सुब्ह आई तो खुश हो गए और शुक्राने में नमाज़े फ़ज़्र अदा की ।

पाचों नमाज़ें उम्मतें मुस्तफ़ा को दी गई

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : और उम्मतों को नमाज़े पन्जगाना (या'नी पांच वक़्त की नमाज़ें) नहीं मिली येह इस उम्मत की खुसूसिय्यत है (या'नी उम्मतें मुस्तफ़ा को मिली हैं) । हां येह नमाज़ें अ़लाहदा अ़लाहदा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने अदा कीं ।

(शाने हबीबुर्हमान, स. 125)

नमाज़ और मा तहत्तों का ख़याल रखो

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا बयान फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने मरजे विसाल (या'नी जिस

बीमारी में जाहिरी वफ़ात शरीफ़ हुई उस) में फ़रमाते थे : “नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते रहो और अपने गुलामों का ख़याल रखो ।”

(ابن ماجه ج ۲ ص ۲۸۲ حدیث ۱۶۲۰)

मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आख़िरी वसियत

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी नमाज़ की पाबन्दी व हिफ़ाज़त करो मरते दम तक न छोड़ो । मा'लूम हुवा कि नमाज़ बड़ा ही अहम फ़रीज़ा है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुसूसियत से इस की वसियत फ़रमाई, सआदत मन्द औलाद बाप की वसियत सख़्ती से पूरी करती है । सआदत मन्द उम्मती वोह है जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इस वसियत पर सख़्ती से पाबन्दी करे, अल्लाह पाक तौफ़ीक़ दे ।

(मिरआतुल मनाजीह, 5/166 मुख़ासरन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

नमाज़ जन्नत की चाबी (KEY) है

हज़रते जाबिर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि अल्लाह पाक के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत की चाबी नमाज़ है और नमाज़ की चाबी वुजू ।

(ترمذی ج ۱ ص ۸۵ حدیث ६)

जन्नत के दरजात की चाबी

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : या'नी जन्नत के दरजात (Ranks) की चाबी नमाज़ है लिहाज़ा येह हदीस इस के ख़िलाफ़ नहीं कि जन्नत की चाबी कलिमए तय्यिबा है कि (इस से मुराद) वहां नफ़से जन्नत (या'नी खुद जन्नत ही) की

चाबी मुराद है। अगर्चे नमाज़ की शराइत बहुत हैं : वक़्त, क़िब्ले को मुंह होना वग़ैरा, लेकिन त़हारत बहुत अहम है इस लिये इसे नमाज़ की चाबी फ़रमाया गया। (मिरआतुल मनाजीह, 1/240) हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जिस तरह दरवाज़ा चाबी (Key) के बिग़ैर नहीं खुल सकता, इसी तरह जन्नत का दरवाज़ा भी नमाज़ के बिग़ैर न खुलेगा, इस लिये नमाज़ को “ईमान” के लफ़्ज़ से ता’बीर किया गया है।”

(अशि’अतुल्लम्आत (उर्दू), 1/542)

चाबी के दन्दाने

ताबेई बुजुर्ग हज़रते वहब बिन मुनब्बेह से पूछा गया : क्या اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ जन्नत की चाबी नहीं ? इर्शाद फ़रमाया : क्यूं नहीं ! लेकिन हर चाबी के दन्दाने (Teeth) होते हैं, अगर तुम दन्दाने वाली चाबी लाए तो ताला खुल जाएगा वरना नहीं खुलेगा। (بخاری ج ۱ ص ۴۱۹) सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से जब (ताबेई बुजुर्ग) हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की येह बात ज़िक्र की गई तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : वहब ने सच कहा, क्या मैं तुम्हें उन दन्दानों के बारे में न बताऊं कि वोह क्या हैं ? फिर आप ने नमाज़, ज़कात और अहकामे इस्लाम बयान फ़रमाए। (الروض الانف ج ۴ ص ۳۹۱) “उम्दतुल क़ारी” में है : इस (या’नी जन्नत की) चाबी के दन्दाने फ़राइज़ो वाजिबात का अदा करना और गुनाहों से बचना है।

(عمدة القارى ج ۶ ص ۴ ملخصاً)

हर मुसल्मान जन्नती है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अगर किसी ने फ़राइज़ो वाजिबात में कोताही (या’नी कमी) की और गुनाहों से न बचा मगर ईमान के साथ इस

दुनिया से रुख़सत होने में काम्याब हो गया तो वोह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। **अल्लाह** चाहे तो अपनी रहमत से बे हिसाब ही जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और अगर **مَعَادُ اللَّهِ** गुनाहों के सबब अज़ाब फ़रमाए तो बिल आख़िर जन्नत इनायत फ़रमा देगा। मगर हम जहन्नम से पनाह मांगते हैं, खुदा की क़सम ! एक लम्हे का करोड़वां हिस्सा भी कोई जहन्नम का अज़ाब बरदाश्त नहीं कर सकता।

कहीं का आह ! गुनाहों ने अब नहीं छोड़ा अज़ाबे नार से अज़ार को बचा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

वुज़ू में की जाने वाली बा'ज़ ग़लतियां

नीज़ हृदीसे पाक के हिस्से “नमाज़ की चाबी वुज़ू है” से **वुज़ू** की अहम्मियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। **वुज़ू** तवज्जोह से करना चाहिये ताकि इस का कोई फ़र्ज बल्कि सुन्नत भी न रह जाए। देखिये ना ! अगर कोई सिर्फ़ 250 ग्राम दूध भी गर्म करने के लिये चूल्हे पर रखता है तो चौकन्ना रहता है, क्यूं कि वोह जानता है कि अगर मैं ने ग़फ़लत की तो दूध उबल कर जाएअ हो सकता है। मा'मूली से नुक़सान से बचने के लिये तो इन्सान बराबर ध्यान रखता है मगर अफ़सोस ! आज कल जल्द बाज़ी और ग़फ़लत के सबब, अक्सर लोग **वुज़ू** की सुन्नतों का कोई ख़याल नहीं रखते बल्कि बा'ज़ अवकात तो फ़राइज़ की भी परवा नहीं करते ! मिसाल के तौर पर कुल्ली में मुंह के तमाम अन्दरूनी हिस्सों और दांतों की सब खिड़कियों वगैरा में पानी पहुंच जाए और नाक में पानी चढ़ाने में नर्म बांसे (या'नी नर्म हड्डी) तक पहुंच जाए। **वुज़ू** में इस तरह

कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना सुन्नते मुअक्कदा और गुस्ल में फ़र्ज़ है लेकिन अक्सर लोगों को देखा गया है कि कुल्ली में जल्दी जल्दी तीन बार पिच पिच कर लेते हैं या नाक की नोक पर तीन मरतबा पानी लगा लेते हैं। **वुजू** में एकआध बार ऐसा करना बुरा और इस की आदत बनाना गुनाह है। और अगर गुस्ल में ऐसा किया तो गुस्ल हुवा ही नहीं। यूँही दोनों हाथ कोहनियों तक इस तरह धोने चाहिए कि पानी की धार कोहनी तक बराबर बहती चली जाए लेकिन एक ता'दाद ऐसी भी है जो चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे (या'नी कलाई) से तीनों बार छोड़ देती है, इस तरह धोने से कोहनी बल्कि कलाई की करवटों पर पानी न बहने का इम्कान रहता है, यूँही येह लिहाज़ भी ज़रूरी है कि एक रोंगटा भी (या'नी वोह छोटे छोटे नर्म बाल जो इन्सान के बदन पर होते हैं वोह भी) खुशक न रहे, अगर पानी किसी बाल की जड़ को तर करता हुवा बह गया और बालाई (या'नी बाल का ऊपरी) हिस्सा खुशक रह गया तो **वुजू** न होगा। ग़ौर कीजिये **वुजू** की बे एहतियातियां कितने बड़े उख़्ख़ी नुक्सान का बाइस बनती हैं। वुजू की ज़रूरी मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब “नमाज़ के अहकाम” में शामिल रिसाला “वुजू का तरीका” ज़रूर पढ़िये।

अगर एक इस्लामी भाई भी कोशिश करे तो.....

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वुजू, गुस्ल व नमाज़ का दुरुस्त तरीका सीखने और दुन्या व आख़िरत की बहुत सारी भलाइयां समेटने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहिये। आप की तरगीब के लिये एक “मदनी बहार” पेश की जाती है : एक

शख़्स ने अपनी जिन्दगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा इल्मे दीन से दूरी की वजह से गुनाहों में गुज़ार दिया। एक दिन करीबी गांव के रिहाइशी एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी उन के गांव में तशरीफ़ लाए उन्होंने ने बा'दे अस्स अलाकाई दौरा किया, नमाज़े मगरिब के बा'द सुन्नतों भरा बयान किया और बयान के आख़िर में उन्होंने ने हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की तरगीब भी दिलाई। उस इस्लामी भाई ने इज्तिमाअ में शिर्कत की निय्यत तो कर ली लेकिन दा'वते इस्लामी का मदनी मर्कज़ गांव से काफ़ी दूर होने की वजह से इज्तिमाअ में शरीक न हो सके। अगले हफ़ते वोही इस्लामी भाई फिर तशरीफ़ लाए, अलाकाई दौरा किया और बा'दे मगरिब सुन्नतों भरा बयान किया इसी तरह एक माह गुज़र गया लेकिन वोह इज्तिमाअ में शिर्कत न कर सके। तीसरी बार वोही इस्लामी भाई मदनी काफ़िले के हमराह गांव में तशरीफ़ लाए और इन्फ़रादी कोशिश के ज़रीए उन समेत तीन चार इस्लामी भाइयों को इज्तिमाअ के लिये तय्यार कर लिया। इस मरतबा वोह हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में पहुंचने में काम्याब हो गए। सुन्नतों भरे बयान के बा'द ज़िक्र व दुआ की, दौराने दुआ गिर्या व ज़ारी के रिक्कत अंगेज़ मनाज़िर देख कर उन्हें भी रोना आ गया। इज्तिमाअ की बरकात हाथों हाथ ज़ाहिर हुई और उन्होंने ने येह अज़्मे मुसम्मम कर लिया कि **إِن شَاءَ اللَّهُ** मैं मदनी काफ़िले में ज़रूर सफ़र करूंगा। अगले हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में वोह अकेले ही पहुंच गए और इज्तिमाअ के अगले ही रोज़ मदनी काफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। **الْحَمْدُ لِلَّهِ** मदनी काफ़िले में सफ़र करने की बरकत से उन की नमाज़, वुजू, गुस्ल में पाई जाने वाली ग़लतियां दूर हुई और उन्होंने ने कई

दुआएं भी सीख लीं। उन्होंने ने गुनाहों से तौबा कर के अपने आप को मदनी रंग में रंग लिया। जब मदनी काफ़िले से घर पलटे तो सर पर इमामे का ताज जगमगा रहा था येह सब देख कर लोग हैरान थे कि इस के अन्दर येह तब्दीली कैसे आ गई ? कुछ दिनों के बा'द उन्होंने ने हिम्मत कर के मस्जिद में “फ़ैज़ाने सुन्नत” का दर्स भी शुरूअ कर दिया, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की बरकत से मज़ीद तीन इस्लामी भाइयों ने इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया, इस के बा'द वोह तमाम बा काइदगी से हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करने लगे और रफ़ता रफ़ता उन के गांव में भी मदनी कामों की मदनी बहार आ गई।

आओ मदनी काफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र सुन्नतें सीखेंगे इस में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** सर बसर

(वसाइले बख़िश, स. 635)

नमाज़ नूर है

हज़रते अबू मालिक अशअरी **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** से रिवायत है कि **اَللّٰهُ** पाक के प्यारे नबी **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : **يَا'نِي نَمَازٌ نُّورٌ** या'नी नमाज़ नूर है।

(مسلم ص ١٤٠ حديث ٢٢٢)

नमाज़ के “नूर” होने का मतलब

हज़रते इमाम अबू ज़करिय्या यहूया बिन शरफ़ नववी **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** नमाज़ के नूर होने की वज़ाहत करते हुए लिखते हैं : ❀ इस का मा'ना येह है कि जिस तरह नूर के ज़रीए रोशनी हासिल की जाती है इसी तरह नमाज़ भी गुनाहों से बाज़ रखती (या'नी रोकती) है और बे हयाई और बुरी बातों से रोक कर सहीह राह दिखाती है ❀ एक कौल के मुताबिक़ इस का मा'ना है : **नमाज़** का अज़्रो सवाब बरोजे क़ियामत नमाज़ी के

लिये नूर होगा ❁ एक कौल है : इस का मतलब येह है कि बरोजे क़ियामत नमाज़ी के चेहरे पर नमाज़ नूर बन कर जाहिर होगी नीज़ दुन्या में भी नमाज़ी के चेहरे पर रौनक होगी । (شرح مسلم ج ۲ ص ۱۰۱ ملخصاً)

सज्दे का निशान पुल सिरात पर टोर्च का काम देगा

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : या'नी नमाज़ मुसल्मान के दिल की, चेहरे की, क़ब्र की, क़ियामत की रोशनी है, पुल सिरात पर सज्दे का निशान बैटरी (टोर्च) का काम देगा । रब्बे (पाक) फ़रमाता है : ﴿تَوْرَاهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ﴾ (तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन का नूर दौड़ता होगा उन के आगे) (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1/232)

पढ़ते रहो नमाज़ तो चेहरे पे नूर है पढ़ता नहीं नमाज़ वोह जन्नत से दूर है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

नमाज़ दीन का सुतून है

सरकारे अली वकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ दीन का सुतून है, जिस ने इसे काइम रखा दीन को काइम रखा और जिस ने इसे छोड़ दिया उस ने दीन को ढा (या'नी गिरा) दिया । (منية المصلى ص ۱۲)

चमक्ते चेहरे

मन्कूल है कि जब क़ियामत काइम होगी तो नमाज़ियों को गुरौह दर गुरौह (या'नी ग़ूप्स की सूत में) जन्नत की तरफ़ जाने का हुक्म होगा, जब पहला गुरौह (Group) जन्नत में दाख़िले के लिये लाया जाएगा तो उन के चेहरे सितारों की तरह चमक्ते दमक्ते होंगे, फ़िरिश्ते उन का

इस्तिक्बाल करेंगे और उन से पूछेंगे : तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम उम्मते मुहम्मदिय्यह के **नमाज़ी** हैं, फिर पूछा जाएगा : तुम्हारे आ'माल (नमाज़ों) का क्या हाल था ? वोह कहेंगे : हम अज़ान सुनते ही **बुजू** के लिये खड़े हो जाते थे और दुन्या की कोई चीज़ हमें इस से रोक नहीं सकती थी । **फ़िरिश्ते** कहेंगे : तुम इसी के मुस्तहिक़ हो (कि तुम्हें जन्नत में दाख़िल किया जाए) । फिर **दूसरा** गुरौह (Group) जन्नत में दाख़िले के लिये लाया जाएगा जिन का हुस्नो जमाल (या'नी ख़ूब सूरती) पहले गुरौह से ज़ियादा होगा, उन के चेहरे **चांद** की तरह चमक्ते होंगे, **फ़िरिश्ते** उन से पूछेंगे : तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम **नमाज़** पढ़ने वाले थे, फिर पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ों का क्या हाल था ? वोह कहेंगे : हम **नमाज़** के वक़्त से पहले ही **नमाज़** के लिये **बुजू** कर लेते थे (और जब अज़ान सुनते थे फ़ौरन मस्जिद में हाज़िर हो जाते) । **फ़िरिश्ते** कहेंगे : तुम इसी के मुस्तहिक़ हो । फिर **तीसरा** गुरौह जन्नत में दाख़िले के लिये लाया जाएगा जिन का मक़ामो मर्तबा और हुस्नो जमाल (या'नी ख़ूब सूरती) पहले गुरौहों से कहीं ज़ियादा होगा, उन के **चेहरे आप़्ताब** (या'नी सूरज) की तरह रोशन होंगे, **फ़िरिश्ते** उन से पूछेंगे : तुम इतने ख़ूब सूरत और इतने आ'ला मक़ाम वाले कौन हो ? वोह कहेंगे : हम हमेशा **नमाज़** पढ़ा करते थे । **फ़िरिश्ते** पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ों का क्या हाल था ? वोह कहेंगे : हम अज़ान होने से पहले ही मस्जिद में मौजूद होते थे और अज़ान मस्जिद में ही सुनते थे, **फ़िरिश्ते** कहेंगे : तुम इसी के मुस्तहिक़ हो ।

(قُوت الْقُلُوب ج ٢ ص ٤٦٨)

इक़ रोज़ मोमिनो ! तुम्हें मरना ज़रूर है पढ़ते रहो नमाज़ तो चेहरे पे नूर है

जन्नतों के दरवाजे खुल जाते हैं

अल्लाहु अक्बर ! नमाज़ कितनी प्यारी इबादत है कि शुरूअ करते ही जन्नतों के दरवाजे खुल जाते हैं, चुनान्चे हज़रते अबू उमामा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है, शहन्शाहे दो अ़ालम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “बन्दा जब नमाज़ के लिये खड़ा होता है उस के लिये जन्नतों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, और उस के और परवर्दगार के दरमियान हिजाबात (या'नी पर्दे) हटा दिये जाते हैं। और हूरे ईन (या'नी बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरे) उस का इस्तिक़बाल करती हैं जब तक न नाक सिन्के न खन्कारे।”

(معجم كبير ج ٨ ص ٢٥٠ حديث ٧٩٨٠)

कोई फ़िरिश्ता रुकूअ में है कोई सज्दे में

हज़रते अबू सईद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह पाक ने कोई ऐसी चीज़ फ़र्ज न की जो तौहीद व नमाज़ से बेहतर हो। अगर इस से बेहतर कोई चीज़ होती तो वोह ज़रूर फ़िरिश्तों पर फ़र्ज करता। इन (या'नी फ़िरिश्तों) में कोई रुकूअ में है कोई सज्दे में।

(ألفردوس بمأثور الخطاب ج ١ ص ١٦٥ حديث ٦١٠)

अर्श वाले फ़िरिश्ते मुसलमानों की बख़्शिश मांगते रहते हैं

मन्कूल है कि जब अल्लाह पाक ने सात आस्मान पैदा फ़रमाए तो इन्हें फ़िरिश्तों से भर दिया, वोह नमाज़ पढ़ कर इबादत करते हैं और एक घड़ी भी तसाहुल (या'नी ग़फ़लत) नहीं करते। अल्लाह पाक ने हर आस्मान वालों के लिये इबादत की एक खास क़िस्म मुक़र्रर फ़रमा दी। चुनान्चे बा'ज आस्मान वालों पर येह इबादत मुक़र्रर हुई कि वोह सूर फूंकने तक पांव पर खड़े रहें, एक आस्मान वाले रुकूअ में झुके हुए हैं,

एक आस्मान वाले सज्दे में हैं, एक आस्मान वालों के पर **अल्लाह** पाक के जलाल के सामने गिरे हुए हैं, **इल्लिय्यीन** (या'नी सातवें आस्मान) वाले और अर्श वाले अर्श इलाही के गिर्द तवाफ़ कर रहे हैं और **अल्लाह** पाक की हम्दो तस्बीह कह (या'नी ता'रीफ़ व पाकी बयान कर) रहे हैं, और ज़मीन वालों के लिये दुआए बख़्शिश मांग रहे हैं। मुसलमानों की फ़ज़ीलत की ख़ातिर इन सब इबादतों को एक **नमाज़** में जम्अ कर दिया जाता है ताकि इन्हें (या'नी मुसलमानों को) हर आस्मान वालों की इबादत में हिस्सा मिल जाए। (مکاشفة القلوب ص २१२) (मुकाशफ़तुल कुलूब (उर्दू), स. 451 मुलख़ब्रसन)

दरबारे मुस्तफ़ा में तुम्हें ले के जाएगी ख़ालिक़ से बख़्शवाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

एक लाख फ़िरिशते

हज़रते इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ नक़ल करते हैं : “मोमिन बन्दा जब **नमाज़** पढ़ता है तो उस से फ़िरिशतों की दस सफ़ें तअज्जुब करती हैं जिन में हर एक सफ़ दस हज़ार की होती है। और **अल्लाह** पाक उस बन्दे पर उन एक लाख फ़िरिशतों के सामने फ़ख़्र करता है।”

(اُخْبَاءُ الْعُلُومِ ج १ ص २३१) (एहयाउल इलूम (उर्दू), जि. 1/526)

फ़िरिशतों के तअज्जुब करने की वजह

हज़रते इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ येह रिवायत बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : इस की वजह येह है कि बन्दे की **नमाज़** में क़ियाम व कुज़ुद और रुकूअ व सुजूद

जम्अ होते हैं जब कि अल्लाह पाक ने इन चार अरकान को 40 हज़ार फ़िरिश्तों में तक्सीम किया है। क़ियाम करने (या'नी खड़े रहने) वाले फ़िरिश्ते क़ियामत तक रुकूअ नहीं करेंगे। सज्दा करने वाले ता क़ियामत इस से सर नहीं उठाएंगे। इसी तरह रुकूअ और क़ा'दा करने वालों का हाल है क्यूं कि अल्लाह पाक ने फ़िरिश्तों को जो कुर्ब (या'नी अपनी नज़्दीकी का शरफ़) व रुत्बा अता फ़रमाया है (उस के मुताबिक़) उन पर हमेशा एक ही हालत पर रहना लाज़िम है इस में कमी बेशी (या'नी कम या ज़ियादा) नहीं हो सकती। अल्लाह पाक ने इन के मुतअल्लिक़ ख़बर देते हुए पारह 23 सूरतुस्साफ़फ़ात आयत 164 में इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَمَا مِمَّا آتَاكُم مِّنَ مَّوَدِّعِهِمْ﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़िरिश्ते कहते हैं हम में हर एक का एक मक़ाम मा'लूम है।

“तफ़सीर सिरातुल जिनान” जिल्द 8 सफ़हा 357 ता 358 पर बयान कर्दा आयते करीमा के हिस्से (وَمَا مِمَّا) या'नी हम में हर एक के लिये) के तहूत है : (इस की एक) तफ़सीर येह है कि हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! “हम फ़िरिश्तों के गुरौहों में से हर एक के लिये एक जगह मुक़रर है जिस में वोह अपने रब्बे पाक की इबादत करता है।” हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि आस्मानों में बालिशत भर भी जगह ऐसी नहीं है जिस में कोई फ़िरिश्ता नमाज़ न पढ़ता हो या तस्बीह न करता हो।

(روح البيان ج ٧ ص ٤٩٤ تا ٤٩٥، خازن ج ٤ ص ٢٨)

नमाज़ नूर है

हज़रते अबू मालिक अरअमी رضي الله عنه से रिवायत है कि अल्लाह पाक के प्यारे नबी صلوات الله عليه وآله ने फरमाया :
النَّامَازُ نُورٌ -

(सुन्ने मुब्तदा, 1/40, 223)